नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

पश्चिम एशिया युद्ध; भारत की संतुलित कूटनीति

पश्चिम एशिया एक बार फिर युद्ध की आंच में तप रहा है. अमेरिका-इजराइल और ईरान के बीच बढ़ते सैन्य तनाव ने पूरे क्षेत्र को अस्थिर बना दिया है. ऐसे समय में भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए संतुलित और जिम्मेदार कूटनीतिक भूमिका निभाए. राज्यसभा में विदेश मंत्री एस. जयशंकर का हालिया बयान इसी संतुलित दृष्टिकोण का स्पष्ट संकेत देता है.

भारत की नीति तीन स्पष्ट स्तंभों पर आधारित है,शांति और संवाद, भारतीय नागरिकों की सुरक्षा और राष्ट्रीय-ऊर्जा हितों की रक्षा. यह दृष्टिकोण केवल आदर्शवाद नहीं बल्कि व्यावहारिक कूटनीति का उदाहरण है. पश्चिम एशिया भारत के लिए केवल एक दूरस्थ भू-राजनीतिक क्षेत्र नहीं है. यह वह इलाका है जहां लगभग एक करोड़ भारतीय रहते और काम करते हैं, जहां से भारत अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं का बड़ा हिस्सा प्राप्त करता है और जहां से वैश्विक व्यापारिक मार्ग गुजरते हैं. इसलिए भारत के लिए इस संकट का मानवीय और आर्थिक दोनों पहलुओं से गहरा महत्व है. अब तक लगभग 67,000 भारतीयों की सुरक्षित वापसी यह दर्शाती है कि सरकार इस चुनौती को गंभीरता से ले रही है. विदेश मंत्रालय और दूतावासों की सक्रियता इस बात का प्रमाण है कि भारत अपने नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है.

ईरान को मानवीय आधार पर अपने युद्धपोत को भारतीय बंदरगाह पर डॉक करने की अनुमति देना भारत की परंपरागत कूटनीतिक शैली को भी दर्शाता है. भारत ने हमेशा कठिन परिस्थितियों में भी मानवीय मूल्यों और संतुलित संबंधों को महत्व दिया है. ईरान के साथ भारत के ऐतिहासिक और रणनीतिक संबंध रहे हैं, वहीं इजराइल और अमेरिका के साथ भी भारत की साझेदारी लगातार मजबूत हुई है. ऐसे में किसी एक पक्ष की ओर झुकाव दिखाने के बजाय संतुलन बनाए रखना ही भारत की वास्तविक शक्ति है.हालांकि इस संकट के व्यापक प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. यदि यह युद्ध और फैलता है तो वैश्विक सप्लाई चेन पर गंभीर असर पड़ सकता है. तेल की कीमतों में संभावित उछाल भारत जैसे ऊर्जा आयातक देश के लिए बड़ी आर्थिक चुनौती बन सकता है. इसका सीधा प्रभाव महंगाई, परिवहन लागत और आम उपभोक्ता के जीवन पर पड़ेगा.समुद्री सुरक्षा भी एक गंभीर चिंता बनकर उभरी है. व्यापारिक जहाजों पर हमलों में भारतीय नाविकों की मौत और एक के लापता होने की खबर यह बताती है कि यह संकट केवल कूटनीतिक बहस तक सीमित नहीं है बल्कि इसके मानवीय और सुरक्षा आयाम भी बेहद गंभीर हैं. हिंद महासागर और अरब सागर के समुद्री मार्ग भारत के व्यापार के लिए जीवनरेखा हैं.

ऐसे समय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्थिति की प्रत्यक्ष निगरानी और सुरक्षा मामलों की कैबिनेट समिति की बैठक यह संकेत देती है कि भारत सरकार संभावित संकटों के लिए तैयार रहना चाहती है. समन्वित सरकारी तैयारी इस बात का संकेत है कि भारत केवल प्रतिक्रियात्मक नहीं बल्कि सक्रिय रणनीति अपना रहा है.पश्चिम एशिया का यह संकट भारत के लिए एक महत्वपूर्ण परीक्षा भी है. एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में भारत को न केवल अपने हितों की रक्षा करनी है बल्कि वैश्विक शांति के लिए रचनात्मक भूमिका भी निभानी है. जयशंकर का बयान इसी व्यापक दृष्टि को सामने लाता है कि भारत युद्ध का नहीं, संवाद का पक्षधर है. मौजूदा दौर की अस्थिर दुनिया में यही संतुलित कूटनीति भारत की सबसे बड़ी ताकत बन सकती है. भारत की चुनौती यही है कि वह शांति की आवाज भी बना रहे और अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा भी करता रहे.

नीतीश कुमार की विदाई की पटकथा

कृष्णमोहन झा

गत वर्ष भाजपा के समर्थन से दसवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर एक कीर्तिमान स्थापित करने वाले नीतीश कुमार राज्यसभा के लिए नामांकन दाखिल कर चुके हैं और इसके लिए उन्होंने यह हास्यास्पद तर्क दिया है कि वे बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों के सदस्य बनने के साथ ही संसद के भी दोनों सदनों के सदस्य बनने की वर्षों पुरानी साध को पूरा करना चाहते हैं. शायद नीतीश कुमार ने तय कर लिया था कि अपने मन की उस अधूरी साध का रहस्योदघाटन वे बिहार से राज्यसभा की सीट के लिए नामांकन दाखिल करने के बाद ही करेंगे.

> गौरतलब है कि 2013 में जब भाजपा ने देश के सबसे लोकप्रिय नेता के रूप में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार के रूप में प्रोजेक्ट करने का फैसला किया था तब नीतीश कुमार ने उस फैसले से कुपित होकर एक झटके में एनडीए से अपनी पार्टी के 19 साल पुराने संबंध तोड़ दिए थे. नीतीश कुमार को बाद में अपने फैसले पर पश्चाताप हुआ और वे फिर एनडीए में लौट आए लेकिन इसके पहले वे यह घोषणा भी कर चुके थे कि भाजपा के विरुद्ध माहौल बनाने के लिए देश भर का दौरा करेंगे लेकिन नीतीश कुमार को यूपीए में अपनी महत्वाकांक्षाएं पूरी न होने से उन्होंने उससे भी दूरी बना ली और कभी भाजपा कभी विपक्षी महागठबंधन से जुड़कर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज रहने में कामयाब होते रहे. परंतु अब बाजी पलट चुकी है . अब उन्हें उस भाजपा की शर्तों पर राजनीति करनी होगी जिसने उत्तर प्रदेश में मायावती की बसपा और महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे की शिवसेना के सामने अस्तित्व का संकट पैदा कर दिया है. यही हाल देश के क ई राज्यों में क्षेत्रीय दलों का हो चुका है.

पिछले दिनों राज्य सभा सीट के नामांकन दाखिल करने से जब उनकी पार्टी के कार्यकर्ता अत्यधिक व्याकुल हो गये तब नीतीश कुमार ने आखिरकार वह रहस्योद्घाटन कर ही दिया जो अब तक जदयू के कार्यकर्ताओं के गले नहीं उतर रहा है. नीतीश कुमार ने बताया कि उनके मन में वर्षों से यह उत्कंठा बनी हुई थी कि वे बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों की सदस्यता के साथ ही संसद के भी दोनों सदनों की सदस्यता अर्जित करने का कीर्तिमान स्थापित करें. राज्यसभा सीट के लिए दाखिल करने का फैसला नीतीश कुमार ने अपनी इस अधूरी साध को पूरा करने की मंशा से किया है इस तर्क को जदयू के कार्यकर्ता तो क्या कोई भी स्वीकार नहीं कर पा रहा है. उनका मानना है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी छोड़ कर राज्य सभा में बैठने का फैसला नीतीश कुमार ने भाजपा के दबाव में आकर किया है जिससे पार्टी कार्यकर्ताओं का मनोबल टूटना स्वाभाविक है लेकिन नीतीश कुमार उन्हें यह कह कर सांत्वना दे रहे हैं कि राज्य सभा का सदस्य बन जाने के बाद भी बिहार की राजनीति पर उनकी नजर बराबर बनी रहेगी और वे जदयू के हितों को संरक्षण प्रदान करते रहेंगे.

दरअसल पिछले साल संपन्न हुए बिहार विधानसभा चुनावों में जब भाजपा ने जदयू से अधिक सीटें जीतने के बावजूद नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री का ताज धारण करने का सौभाग्य प्रदान किया था तभी इस उलटफेर की पटकथा लिखी जा चुकी थी. बस , भाजपा उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रही थी. उधर कुर्सी की राजनीति के चतुर खिलाड़ी नीतीश कुमार भी उसी समय इस कड़वी हकीकत का अंदाजा लगा चुके थे कि अब भाजपा से बड़े भाई का सम्मान मिलने की उम्मीद उन्हें हमेशा हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए यही कारण है कि उन्होंने मुख्यमंत्री की कुर्सी का मोह त्याग कर राज्य सभा में जाने का विकल्प स्वीकार कर लिया. अब यह उत्सुकता का विषय है कि राज्यसभा में पहुंचने के बाद केंद्र में उनकी क्या भूमिका होगी.

इतना तो तय है कि नीतीश कुमार अपनी कोई शर्त पेश करने की स्थिति में नहीं रह गए हैं. दरअसल दरअसल भाजपा की शर्तों पर राजनीति करने की मजबूरी में तो वे ढाई साल पहले ही आ गए थे जब उन्होंने राजद से संबंध तोड़ कर भाजपा के सहयोग से 9 वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण की थी. उसके बाद उनके नेतृत्व में जब एनडीए बिहार विधानसभा के चुनाव में उतरा तो भाजपा ने अपने रणनीतिक कौशल का इस्तेमाल करके सभी घटक दलों में सीटों का बंटवारा कुछ इस तरह किया कि नवनिर्वाचित विधान सभा में भाजपा ने सबसे बड़ी पार्टी के रूप में प्रवेश करने में सफलता अर्जित की और नीतीश कुमार की पार्टी दूसरे स्थान पर रही. उसके बावजूद भाजपा ने अपनी रणनीति के तहत नीतीश कुमार को मुख्यमंत्री की कुर्सी से उपकृत किया लेकिन दसवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेकर नीतीश कुमार ने उस समय भले ही एक कीर्तिमान स्थापित कर लिया था परंतु उनके चेहरे पर वह चमक नहीं थी जो उन्होंने कभी सुशासन बाबू के रूप में अर्जित की थी.

दरअसल वह चमक तो मुख्यमंत्री के रूप में उनके पहले कार्यकाल के बाद ही धीरे धीरे फीकी पड़ने लगी थी. अब तो बिहार में उनकी एकमात्र पहचान यही है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए वे आत्म सम्मान से समझौता करने से उन्हें गुरेज नहीं है.

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

दिल्ली डायरी

नीतीश कुमार के फैसले से सियासी हलकों में हलचल

प्रवेश कुमार मिश्र

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार द्वारा राज्यसभा उम्मीदवार बनने के निर्णय को भले ही व्यक्तिगत बताया जा रहा है लेकिन सच्चाई यह है कि उनके निर्णय से बिहार की राजनीति में अचानक उथल-पुथल मच गई है. नीतीश के निर्णय से जदयू का एक बड़ा खेमा असंतुष्ट होकर इसके पीछे कोई बड़ी साजिश मान रहा है तो दूसरा खेमा इसे नीतीश कुमार द्वारा बेटे निशांत कुमार के राजनीतिक भविष्य के लिए बड़ा दांव मान रहा है जबकि राजनीतिक गलियारों में इस निर्णय की समीक्षा बहुस्तरीय दृष्टिकोण से की जा रही है.

चर्चा है कि इस पूरे घटनाक्रम के पीछे भाजपाई रणनीतिकारों की बड़ी योजना छिपी हुई है. नीतीश के गिरते स्वास्थ्य और सत्ता पर ढीली होती उनकी पकड़ को ध्यान में रखते हुए जदयू के कुछ वरिष्ठ नेताओं व भाजपाई रणनीतिकारों द्वारा सत्ता-हस्तांतरण के बेहतर विकल्प के रूप में इस रास्ते को चुना गया. हालांकि अभी भी बिहार से लेकर दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में चर्चा है कि नीतीश कुमार सत्ता की चाबी अपने हाथों से जाने देने को तैयार नहीं हैं संभवत: इसी वजह से नीतीश कुमार भाजपा के बजाय जदयू के किसी विश्वस्त सहयोगी को मुख्यमंत्री की कुर्सी सौंपने पर अड़े हुए हैं. जबकि भाजपा जदयू को उपमुख्यमंत्री की कुर्सी देने की पेशकश कर रही है.

मुख्यमंत्री की कुर्सी पर भाजपाई नेताओं की नजर

नीतीश कुमार द्वारा राज्यसभा उम्मीदवार बनने के बाद बिहार के तमाम वरिष्ठ भाजपाई नेताओं की नजर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर लग गई है. हालांकि जिन नेताओं का नाम मीडिया में बढ़-चढ़कर चल रहा है वे पार्टी के चौंकाने वाले निर्णय से परेशान होकर दबे जुबान से अपनी दावेदारी का खंडन भी कर रहे हैं. उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी,विजय सिन्हा, केन्द्रीय राज्यमंत्री नित्यानंद राय, गिरिराज सिंह, सतीश चन्द्र दुबे, वरिष्ठ विधायक प्रेम कुमार, पूर्व अध्यक्ष व सांसद संजय जायसवाल, दिलीप जायसवाल, शहनवाज हुसैन,जनक राम, संजीव चौरसिया, मैथिली ठाकुर जैसे नामों की चर्चा बिहार से दिल्ली की राजनीतिक गलियारों में खुब सुनाई दे रही है लेकिन उक्त सभी नेता मीडिया से बचते दिख रहे हैं. ऐसे नेताओं का तर्क है कि जब भी मीडिया में किसी का बढ़-चढ़कर नाम चलता है उसका पत्ता कट जाता है और पार्टी चौंकाने वाली निर्णय कर लेती है. इसीलिए बिहार भाजपा के नेता कुर्सी की चाहत रखने के बावजूद बच बच कर बोल रहे हैं.

भाजपा का 'मिशन केरलम 2026'

भाजपा केरल में अपना पैर जमाने के लिए तीन महत्वपूर्ण एजेंडे पर काम कर रही है. विकसित केरल, सुरक्षित केरल और आस्था का संरक्षण जैसे मुद्दों के सहारे केरल के एक खास वर्ग के वोटरों को रिझाने की तैयारी में लगी हुई है. चर्चा है कि गृहमंत्री अमित शाह की विशेष निगरानी में मिशन केरलम को आगे बढ़ाया जा रहा है. चर्चा है कि हिंदू मतदाताओं के साथ-साथ ईसाई मतदाताओं को केन्द्र में रखकर आपसी विश्वास की कमी को दूर करने के लिए 'स्नेह यात्रा' जैसे संपर्क अभियान चलाते हुए अपने को तीसरे विकल्प के रूप में स्थापित करने में जुटी है. दिल्ली में केरल के वरिष्ठ नेता सुरेश गोपी व राजीव चंद्रशेखर के साथ भाजपा लगातार समीक्षा बैठक कर रही है.

कांग्रेस की आक्रामक रणनीति से असम में फंसा पेंच

असम की राजनीति लड़ाई अब भाजपा के लिए एकतरफा नहीं है बल्कि कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी के आक्रामक सक्रियता से ऊपरी व निचले असम के बीच की दूरी को पाटकर कांग्रेस अपने लिए बेहतर स्थिति बनाने लग गई है. कांग्रेस ने अपने उम्मीदवारों की पहली सूची जारी कर भाजपा को समय रहते चुनौती दी है. हालांकि कांग्रेसी व भाजपाई रणनीतिकार दिल्ली से लगातार प्रचार अभियान पर नजर रखें हुए हैं.

कोर्ट से राहत मिलने के बाद आक्रामक हुए केजरीवाल

आबकारी नीति मामले में बरी होने के बाद दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पुन: आक्रामक अंदाज में भाजपा पर निशाना साध रहे हैं. जहां एक तरफ केजरीवाल ने भाजपा के वरिष्ठ नेताओं पर राजनीति साजिश के तहत उन्हें और उनके दल को खत्म करने के प्रयास का आरोप लगाया वहीं दूसरी ओर दिल्ली सरकार व गुजरात सरकार की नीतियों को आधार बनाकर दोनों सरकारों को घेरने का प्रयास किया है. दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में केजरीवाल की चुप्पी के बाद पुन: पुराने अंदाज में लौटने की चर्चा जोरों पर है.

युद्ध का तेल और गैस पर असर

ईरान ने होर्मुज की खाड़ी से तेलवाही जहाजों का जाना रोककर सारी दुनिया के लिए परेशानी पैदा कर दी है. इससे अमेरिका के मित्र तेल उत्पादक खाड़ी देशों की मुसीबत भी बढ़ गई है. कतर ने प्राकृतिक गैस का उत्पादन बंद कर दिया है. ऐसी ही स्थिति जारी रही तो कुछ सप्ताह में तेल उत्पादक देशों को प्रॉडक्शन बंद करना पड़ेगा. पिछले कुछ दिनों में क्रूड ऑइल की दर प्रति बैरल 92 डॉलर से ऊपर चली गई जिसमें और वृद्धि होने के आसार हैं. भारत अपनी आवश्यकता का 85 प्रतिशत तेल विदेश से आयात करता है. इसमें से आधा होर्मुज की खाड़ी से होकर आता है. इसी तरह 90 फीसदी प्राकृतिक गैस भी इसी मार्ग से आती है. यह मार्ग बंद होने से देश को पेट्रोल-डीजल, एलपीजी, सीएनजी गैस की कमी का सामना करना पड़ेगा तथा उसके दाम और बढ़ सकते हैं. इस दौरान भारत रूस से तेल लेना जारी रखेगा. रसोई गैस के दाम में इजाफा हो गया है. इससे गृहिणियों की चिंता बढ़ गई है. ईरान ने हाईफा में स्थित इजराइल की सबसे बड़ी तेल रिफाइनरी पर मिसाइलों से हमला कर दिया. यह रिफाइनरी भारत और इजराइल के सहयोग से निर्मित है. हमले की वजह से इजराइल में 60 फीसदी तेल सप्लाई ठप हो गई. अमेरिका व इजराइल के ईरान पर हमले को 9 दिन पूरे हो गए हैं. यह युद्ध कब तक चलेगा, कहा नहीं जा सकता. इस लड़ाई ने पूरी दुनिया को आर्थिक परेशानी में डाल दिया है. युद्धरत देशों को रोकने वाला कोई नहीं है. संयुक्त राष्ट्र (यूएन) पूरी तरह निष्क्रय होकर रह गया है. अमेरिका ने ईरान के खिलाफ कुर्द विद्रोहियों को भी मैदान में उतारने की ठान ली है. पश्चिम एशिया अत्यंत अशांत हो गया है, जहां 90 लाख से अधिक भारतीय काम करते हैं और वहां से रकम अपने घर भेजते हैं. ईरान में भी 9,000 भारतीय छात्र हैं. सभी जान का खतरा महसूस कर रहे हैं. विमानसेवा ठप होने से हजारों प्रवासी पर्यटक अटक गए हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नहीं बने एयरोस्पेस कारोबारी राहुल की कौन सी थी लाचारी

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, व्यक्ति कभी अपनी स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होता. वह जो बनना चाहता है, उसकी बजाय कुछ और बन जाता है. कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने कहा कि अगर वे राजनीति में नहीं होते तो एयरोस्पेस कारोबारी बन जाते.'

पड़ोसी ने कहा, 'हवाई जहाज के पुर्जे बनाने या बेचने की बजाय राहुल ऐसी राजनीति में आ गए, जहां हवा-हवाई वादे किए जाते हैं. हवा के साथ-साथ, घटा के संग-संग नेता पार्टी बदल लेते हैं. चुनाव जीतने के बाद नेता पब्लिक से दूर हो जाता है. वह कहता है- उड़नखटोले पे उड़ जाऊं, तेरे हाथ न आऊं ! जनता की समस्याओं से खुद को अलग रखकर वह गुनगुनाता है-बरबादियों का जश्न मनाता चला गया, हर फिक्र को धुएं में उड़ाता चला गया!'

हमने कहा, 'राहुल ने एयरोस्पेस का कारोबार करने की बजाय मोहब्बत की दुकान का काउंटर संभाल लिया. प्रधानमंत्री मोदी कहते हैं कि 145 करोड़ भारतीय ही मेरा परिवार हैं जबकि राहुल गांधी ने अपने परिवार की चर्चा करते हुए कहा कि वह एक पायलट हैं. उनके पिता और चाचा भी पायलट थे. यह सब परिवार में चलता रहता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, समय-समय पर विदेश जाने वाले राहुल राजनीति में ठीक से टेक-ऑफ नहीं कर पाए. ले-देकर 3 राज्य कर्नाटक, तेलंगाना और हिमाचल प्रदेश में उनका बेस है लेकिन अधिकांश राज्यों में बीजेपी ने शान से लैंडिंग की है. राहुल यदि पायलट होने का दावा करते हैं तो भी यूपी में अखिलेश यादव और बंगाल में ममता बनर्जी उन्हें लैंड करने नहीं देते. इन राज्यों में कांग्रेस की क्रैश लैंडिंग हो जाती है. विपक्ष का 'इंडिया' गठबंधन ठीक से डांडिया भी नहीं खेल पाता.'

हमने कहा, 'राहुल रहते यहां हैं लेकिन तारीफ चीन की करते हैं. उन्होंने कहा कि चीन ने एक शानदार इंडस्ट्रियल सिस्टम बनाया है जिसका दुनिया में कोई मुकाबला नहीं है.'

पड़ोसी ने कहा, 'चीन ने पाकिस्तान और ईरान को एयर वॉरफेयर के लिए ड्रोन और मिसाइल दिए लेकिन वह अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं. ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान को समझ में आ गया कि चीनी हवाई हथियार नाकारा है. राहुल का सुझाव है कि यदि भारत अपने लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखते हुए मजबूत औद्योगिक प्रोडक्शन सिस्टम खड़ा कर लेता है तो यह भारत ही नहीं पूरी दुनिया के लिए बड़ी मदद होगी. लगता है, उन्होंने मोदी के मेक इन इंडिया व स्वदेशी पर गौर नहीं किया !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12194 - डॉ. सागर खादीवाला

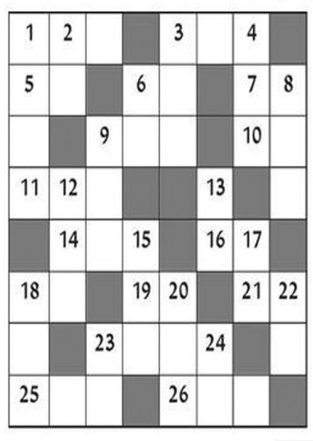

तरंग 6. कोयले के रंग का, स्याह 8. बंदर की मादा 9. राजा अकबर के पुत्र जहांगीर का नाम 12. पदचिन्ह, डग, एक सदाबहार वृक्ष 13. पेड़ की त्वचा 15. अनुकृति, अनुकरण, प्रतिलिपि (उर्दू) 17. किवाड़-संदूक आदि बंद करने के लिए लगाया जाने वाला यंत्र 18. खबर रखना, पहचानना 20. बंदर भालू आदि का तमाशा दिखाने वाला बाजीगर 22. डर 23. छोटा टुकड़ा 24. लीन, लिप्त

बाएं से दाएं

1. उत्कट, प्रबल, जो दबाया न जा सके (सं.) 3. डरावना, भयानक (सं.) 5. दली हुई मूंग-अरहर आदि 6. समय, मृत्यु 7. वायु 9. परामर्श, राय (उर्दू) 10. रण, युद्ध, जंगल 11. सूत कातने का छोटा उपकरण 14. बलपूर्वक दबाना 16. बेल 18. अमरूद 19. अल्प, थोडा 21. नफा, फायदा 23. कल से ढाला गया सिक्का 25. नासमझी, मूर्खता 26. रिक्त होना, खाली करना

ऊपर से नीचे

1. शत्रुता, बैर (उर्दू) 2. गुट, झुंड, गिरोह, पत्ता 3. झगड़ा 4. हिलोर,

Solution 12193

श	शी	क	ला	■	सु	वा	स
रा	त	■	भ	भ	क	■	घ
फ	■	शु	क	■	रा	ज	न
त	म	■	र	ज	त	■	■
■	लं	का	■	न	■	वि	प्र
मृ	ग	न	य	नी	■	ना	ग
णा	■	■	क्षमा	■	नि	य	ति
ल	ज्ञि	त	■	घा	त	क	■

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यों में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यर्थ की भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी,मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यों में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रह सकता है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को कर्मचारियों के सहयोग से कार्यों में सफलता मिलेगी, चिन्ता का निवारण होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक कमी का अनुभव होगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यों में सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में सफलता, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शिक्षा अच्छी रहेगी. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को धार्मिक यात्रा के योग हैं.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील कोमल, भावुक परोपकारी तथा मिलनसार होगा. खेलकूद के प्रति अधिक ध्यान देगा. स्वास्थ्य अच्छा रहेगा. बचपन में आकस्मिक स्वास्थ्य कष्ट होगा. विद्या में विलंब होगा. माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

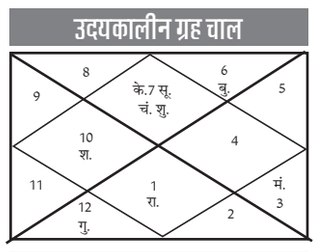

पंचांग

रा.मि. 20 संवत् 2082 चैत्र कृष्ण अष्टमीं बुधवासरे रात 2/18, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 8/24, वज्र योगे दिन 8/0, बालव करणे सू.उ. 6/8, सू.अ. 5/52, चन्द्रचार वृश्चिक रात 8/24 से धनु, शु.रा. 8, 10, 11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण अष्टमीं को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी में मंदी होगी, रूई कपास में तेजी होगी. गुड़ खांड़, के भाव धीरे धीरे नरम गरम रहेगें. आज हाजिर मार्केट में बने भाव नीचे गिर सकते हैं. व्यापार का रूख सामान्य रहेगा. भाग्यांक 2543 है.

मेष- धन मान सम्मान एवं यश कीर्ति में वृद्धि होगी. अचानक नये कार्य आपके उपर आ सकते हैं. सुख रहेगा. विकास की योजना बनेगी.

वृषभ- व्यर्थ की समस्या का सरलता से समाधान होगा. सहयोग में कमी आयेगी. दूर दराज की यात्रा होगी. विवादास्पद मामलों को टालें.

मिथुन- आपसी तनाव से मानसिक परेशानी होगी. कोई ऐसा कार्य बनेगा. जो आपके लिये हितकर रहेगा. मांगलिक कार्यों पर खर्च होगा.

कर्क- किसी बहुप्रतीक्षित कामना की पूर्ति होगी. जीवन साथी का सहयोग रहेगा. ज्वरअतिसार से पीड़ित हो सकते है. सुख का अनुभव रहेगा.

सिंह- आपके दायित्वों की पूर्ति होगी. यात्रा में लाभ प्राप्त होगा. पुरूषार्थ बना रहेगा. जोखिम के कार्यो से बचने का प्रयास करें. यात्रा हो सकती है.

कन्या- महत्वाकांक्षी योजनाओं की पूर्ति होगी. मनोरंजक प्रवास हो सकता है. लाभ होगा. सतर्कता व सावधानी बांछनीय है. सफलता मिलेगी.

तुला- शासकीय कार्यो में यश, मान सम्मान मिलेगा. प्रिय संदेश प्राप्त हो सकता है. दूर दराज की यात्रा में सतर्कता रखें. दाम्पत्य सुख मिलेगा.

वृश्चिक- धार्मिक कार्यों में खर्च होगा. दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार प्राप्त होगा. सावधानी बांछनीय. कार्य कुशलता बनी रहेगी.

धनु- सत्कार्यों में खर्च होगा. आर्थिक एवं व्यापारिक कार्यों में लाभ होगा. विरोधी वर्ग सक्रिय रहेगा. शुभ संदेश प्राप्त होगा. नवीन योजना बनेगी. प्रसन्नता रहेगी.

मकर- पारिवारिक वातारण सुखद एवं अनुकूल रहेगा. मन में विशेष हर्ष रहेगा.सहयोग में कमी आयेगी. स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें. पद प्रतिष्ठा बढ़ेगी.

कुम्भ- आर्थिक कार्यों में सावधानी रखें. जोखिमदारी कार्यो को फ्लिहाल टालदेना ही उचित होगा. अनावश्यक वाद विवाद को टालें.

मीन- पारिवारिक निकटता रहेगी, सुखद समाचार मिलेगा. किसी कार्य में संलग्नता रहेगी. भूमि भवन मकान आदि का कार्य सरलता से होगा.

SUDOKU 7326

		6	4		5	8		
9				1				7
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
3				8				9
		8	6		9	5		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7325

2	4	5	6	9	8	1	7	3
1	7	6	4	3	5	8	2	9
3	8	9	1	2	7	6	5	4
9	1	7	3	6	2	4	8	5
5	6	3	8	7	4	9	1	2
4	2	8	5	1	9	3	6	7
7	3	1	9	5	6	2	4	8
8	9	2	7	4	1	5	3	6
6	5	4	2	8	3	7	9	1